International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# चित्तौड़गढ़ के त्रिमूर्ति मंदिरों का कला और वास्तुशिल्पीय महत्व

**डॉ. लक्ष्मण लाल सरगडा[1], संजय कुमार मोची[2]**

[1]शोध निर्देशक, सह आचार्य (चित्रकला) श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बाँसवाड़ा
[2]शोधार्थी, दृश्यकला विभाग, गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

**शोध सार**

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पुराने समय से ही भारतीय इतिहास, संस्कृति और कला का एक अहम केंद्र रहा है। यहां मौजूद त्रिमूर्ति मंदिर हिंदू धर्म के दार्शनिक सिद्धांतों को दिखाते हैं, जहां ब्रह्मा, विष्णु और शिव को बनाने, बचाने और नष्ट करने का प्रतीक माना जाता है। चित्तौड़गढ़ के त्रिमूर्ति मंदिरों में दिखाया गया त्रिमूर्ति का स्वरुप न सिर्फ धार्मिक नज़रिए से, बल्कि कला और वास्तुशिल्पीय नज़रिए से भी बहुत महत्त्व रखता है। इन मंदिरों का वास्तुशिल्पीय स्वरुप नागर शैली को साफ तौर पर दिखाता है, जिसमें गर्भगृह, मंडप, शिखर की बारीकी से की गई रचना शामिल हैं। मंदिरों की दीवारों और खंभों पर बनी मूर्तियां उस ज़माने के कारीगरों की ज़बरदस्त कला और खूबसूरती की समझ को दिखाती हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्तियों में हाव-भाव, हथियार, गाड़ियों और सजावट को बारीकी से दिखाया जाना प्रतिमा विज्ञान के सिद्धांतों से मेल खाता है। इसके अलावा, मंदिरों में दिखाए गए देवता, अप्सराएँ और पौराणिक कहानियाँ उस समय की सामाजिक और धार्मिक जागरूकता को दिखाती हैं। यह शोध साफ़ तौर पर दिखाता है कि चित्तौड़गढ़ के त्रिमूर्ति मंदिर सिर्फ़ पूजा की जगह नहीं हैं, बल्कि राजस्थानी मंदिर कला और भारतीय वास्तुशिल्पीय विरासत की अहम निशानी भी हैं। उनकी जाँच न सिर्फ़ क्षेत्रीय कला परंपरा को समझने में मदद करती है, बल्कि भारतीय मंदिर वास्तुशिल्पीय में त्रिमूर्ति धारणा के विकास और महत्व पर भी ज़ोर देती है। यह शोध कला और संस्कृति में भविष्य की पढ़ाई के लिए एक कीमती नींव रखती है।

**बीज-शब्द:** त्रिमूर्ति, चित्तौडगढ़, मंदिर, वास्तुकला, ब्रम्हा, विष्णु, महेश, शिव,

**मूल आलेख :-**

**समाधिश्वर महादेव /त्रिभुवन नारायण मंदिर /भोज का मंदिर /मोकलजी का मंदिर, चित्तौड़गढ़ दुर्ग (राजस्थान) -** चित्तौड़गढ़ दुर्ग (राजस्थान) पर स्थित विजय स्तम्भ के दक्षिण दिशा में समिद्धेश्वर महादेव का एक प्राचीन मंदिर स्थित है। "यह मंदिर पश्चिमाभिमुखी तथा भारतीय प्रासाद की नागर शैली में बना हुआ है।"[1] 11वीं सदी में परमार भोज के समय बने समिद्धेश्वर मंदिर की मूर्तियां अलग-अलग स्वरुप के प्रमाण दिखाई देते हैं। इसे त्रिभुवन नारायण मंदिर तथा भोज जगती के नाम से भी जाना जाता था। "इस मंदिर का जीर्णोद्धार 1428 ई. में महाराणा मोकल द्वारा करवाया गया था"[2] इससे संबंधित शिलालेख मंडप की पश्चिमी दीवार पर उत्कीर्ण है, इसमें मंदिर के देवता का वर्णन करते हुए "समाधिशा" और "समाधिश्वर" जैसे शब्दों का उल्लेख किया गया है। जिस कारण इसे मोकल मंदिर भी कहा जाता है। 1460 ई. के कुंभलगढ़ प्रशस्ति शिलालेख में भी मोकल के द्वारा मंदिर के जीर्णोद्धार का उल्लेख प्राप्त होता है। इस मंदिर का उल्लेख कीर्ति-स्तंभ प्रशस्ति शिलालेख में भी किया गया है।

इस मंदिर में देवी-देवताओं के मूर्तिशिल्प के साथ जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं भी स्थापित है। "कुछ विद्वानों ने इसे चालुक्य कालीन जैन मंदिर माना है। क्युंकी कुछ जैन देवियों तथा यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमाएं प्राप्त हुई तथा 1150 ई. में, गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) राजा कुमारपाल ने अजमेर के शासक अर्णोराज (अनोजी) चौहान को पराजित करने के बाद चित्तौड़गढ़ की यात्रा की उन्होंने इस मंदिर में पूजा-अर्चना की और एक गाँव दान में दिया, जहाँ उन्होंने एक शिलापट्ट भी खुदवाया। जिसके आधार पर इसे चालुक्य कालीन जैन मंदिर माना गया।"[3] तथा एक विशाल शिव प्रतिमा प्राप्त हुई है जो 15वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

इस मंदिर में तीन प्रवेश द्वार हैं और इसमें एक अर्ध मंडप, एक अलंकृत सभा मंडप, एक अंतराल और एक विशाल गर्भगृह शामिल है। "गर्भगृह के अंदर भगवान शिव की एक विशाल त्रिमुखी मूर्ति है, जो तीन गुणों और उनके तीन रूपों का प्रतीक है। ये तीन मुख 'सत (सत्यता), रज (वैभव) व तम (क्रोध)' के घोतक है। तथा यह मूर्ती ब्रह्मा, विष्णु और महेश त्रिमूर्ति के रूप में भी जानी जाती हैं।"[4] मंदिर के बाहर, असाधारण मूर्तियों को बारीकी से उकेरा गया है, जो आगंतुकों को विस्मित कर देती हैं। मंदिर के पास एक मठ और एक गौमुख कुंड है, जिसमें गौमुख से बहने वाली जल की पवित्र निरंतर धारा है।

**गर्भगृह :**

गर्भगृह भारतीय वास्तुकला की नागर शैली की विशेषताओं को दर्शाता है; फिर भी 11वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य किए गए जीर्णोद्धार से कलात्मक शैलियों का एक अनूठा मिश्रण सामने आया है। कुछ साक्ष्य संकेत देते हैं कि गर्भगृह निचले स्तर पर स्थित है, जो यह सुझाव देता है कि इसका फर्श मंदिर के बाहरी स्तरों के नीचे स्थित है। यह शैलीगत तत्व अक्सर प्राचीन मंदिरों में पाया जाता है जिनका महत्वपूर्ण धार्मिक अर्थ होता है। गर्भगृह की भीतरी दीवारें सादी हैं, जो विस्तृत भित्तिस्तंभों और आलों से सुसज्जित हैं। पत्थर की चिनाई मजबूत और टिकाऊ है। एक विशाल मूर्ति गर्भगृह की पिछली दीवार के काफी क्षेत्र में फैली हुई है। गर्भगृह के अंदर स्थित मुख्य त्रिमूर्ति छवि, विशेष रूप से इसके चेहरे की विशेषताएं, उस समय की जटिल विस्तृत कला की तुलना में बुनियादी या यहां तक कि आदिम प्रतीत होती हैं।

**अर्धमंडप :** मंदिर में तीन प्रवेश द्वार के साथ-साथ तीन अर्धमंडप भी स्थित है द्वारों की चौखटें कई स्तरों पर जटिल रूप से कलाकृतियाँ की गई हैं, जिनमें देवी-देवताओं, अप्सराओं, किन्नरों और विभिन्न पौराणिक कथाओं को दर्शाया गया है। ये मूर्तियाँ विस्तृत शिल्प कौशल को दर्शाती हैं और उस समय के सांस्कृतिक और सामाजिक तत्वों की झलक प्रदान करती हैं। मूर्तियाँ और नक्काशी 11वीं शताब्दी की परमार शैली की गहनता और 15वीं शताब्दी की मेवाड़ कला के कुछ नवाचारों का मिश्रण प्रस्तुत करती

हैं, जो इस प्रवेश द्वार को कलात्मक शैलियों के एक संग्रहालय में बदल देती हैं। प्रवेश द्वार के ऊपरी क्षैतिज भाग में मूर्तियों की घनी और विस्तृत पंक्तियाँ भी प्रदर्शित हैं। इन पट्टियों पर भी छोटे-छोटे देवताओं या पुष्प और पत्तियों की आकृतियाँ उकेरी गई हैं, जो ऊपरी भाग को एक भारी और अलंकृत रूप प्रदान करती हैं। अलंकरण की यह प्रचुरता अर्धमंडप को प्रभावशाली और आध्यात्मिक रूप से सार्थक बनाती है, जो भक्त को गर्भगृह में प्रवेश करने से पहले एक पवित्र वातावरण में डुबो देती है। प्रवेश द्वार के मध्य में एक अर्धवृत्ताकार पत्थर का चबूतरा जिसे चंद्रशिला कहा जा सकता है।

**नंदीमंडप :**

यह एक सघन खुला मंडप है जिसकी विशेषता चतुर्भुजाकार आकृति है और जो चार स्तंभों पर टिका है। यह संरचना भक्तों को नंदी के दर्शन और पूजा के लिए एक निर्बाध क्षेत्र प्रदान करती है। यह मंडप एक ऊँचे, अलंकृत और मज़बूत पत्थर के आधार पर स्थित है, जो इसे ज़मीन से ऊपर उठाता है और एक अद्वितीय पूजा स्थल का आभास देता है। मंच के किनारों पर कुछ ज्यामितीय नक्काशी भी देखी जा सकती है। छत में साधारण वर्गाकार पत्थर की पटियाएँ हैं, जो स्तंभों के ठीक ऊपर रखी गई हैं। इसका अलंकृत रूप मंडप की विस्तृत नक्काशी को उभर कर सामने लाता है।

**स्तम्भ :** सभामंडप में कई गढ़े हुए स्तंभ दिखाई देते हैं, जिसमें चतुर्भुज एवं अष्ठकोणीय का मिश्रण के साथ नक्काशिदार स्तंभों पर पुष्प, लताओं और ज्यामितीय आकृतियों की नक्काशी की गई है। यह मंदिर कई विशाल और मजबूत स्तंभों पर टिका है। ये स्तंभ विभिन्न प्रकार और शैलियों के हैं। कुछ स्तंभ गोलाकार और चिकने हैं, जबकि कुछ चौकोर हैं जिन पर सतह से उभरी हुई जटिल नक्काशी है। चौकोर स्तंभों पर विशेष ध्यान दिया गया है, जहाँ विभिन्न परतों में अलग-अलग कलाकृतियाँ उकेरी गई हैं। ये अलग-अलग सतह बनावटों का उपयोग कर मंदिर के अंदर एक दृश्य रुचि पैदा करते हैं। कुछ स्तंभों पर घंटी और माला जैसे पारंपरिक हिंदू रूपांकन भी हैं, जो मंदिर के पवित्र वातावरण को दर्शाते हैं। स्तंभों के निचले हिस्सों पर, देवताओं, यक्षों, यक्षिणियों, या अन्य पौराणिक पात्रों की आकृतियाँ

उकेरी गई हैं। ये आकृतियाँ अक्सर खड़ी हुई मुद्रा में हैं और उनके चेहरे के भाव तथा शरीर के वस्त्रों का सूक्ष्म विवरण स्पष्ट दिखाई देता है।

अर्धमंडप में प्रवेश द्वार के दोनों ओर मजबूत और कलात्मक स्तंभ हैं। ये स्तंभ ऊपर की ओर संकरे होते जाते हैं और इन पर फूल घंटियाँ और अन्य ज्यामितीय पैटर्न की बारीक नक्काशी है। इन स्तंभों के नीचे एक काकसाना या पत्थर की रेलिंग है, काकसाना पर लहरदार और बेल-बूटे के पैटर्न हैं, जिनके बीच-बीच में गोलाकार मेडलियन (पदक) बने हैं। इन मेडलियनों में जटिल नक्काशी की गई है, जिनमें से एक में स्पष्ट रूप से एक मानव या पौराणिक आकृति का मुख उकेरा गया है। यह काकसाना न केवल एक कार्यात्मक तत्व है, बल्कि यह मंडप की सुंदरता को भी बढ़ाती है।

नंदिमंड़प स्तंभ खंड कई क्षैतिज खंडों में विभाजित हैं–नीचे एक वर्गाकार आधार, बीच में एक बेलनाकार शाफ्ट और शीर्ष मानव आकृतियाँ: स्तंभों के वर्गाकार और अष्टकोणीय दोनों खंडों पर देवताओं दिव्य अप्सराओं और विभिन्न पौराणिक एवं धार्मिक आकृतियों के चित्रण विस्तृत रूप से उकेरे गए हैं। ये मूर्तियाँ असाधारण शिल्प कौशल और गतिशील मुद्राओं का प्रदर्शन करती हैं। ज्यामितीय और पुष्प आकृतियाँ: स्तंभों के आधार और शीर्ष के चारों ओर ज्यामितीय आकृतियाँ लताएँ और पुष्प पैटर्न शामिल किए गए हैं, जो अलंकरण को बढ़ाते हैं और कलात्मक गहराई प्रदान करते हैं। शैलीगत सम्मिश्रण: इन स्तंभों की जटिल और विस्तृत नक्काशी 11वीं शताब्दी की परमार शैली का प्रतीक है, जहाँ स्तंभों की सजावट का अत्यधिक महत्व था।

**शिखर :** शिखर मंदिर के मुख्य गर्भगृह के ठीक ऊपर पंचरथ स्वरुप में स्थित है, जो इसे मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण और पूजनीय भाग बनाता है। इसकी ऊँचाई और विस्तृत नक्काशी न केवल एक कलात्मक उपलब्धि है, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से मंदिर की आध्यात्मिक शक्ति और दिव्यता का प्रतीक भी है। यह शिखर एक विशाल मीनार की तरह भव्य रूप से उभरा हुआ है, जिसके चारों ओर कई छोटी मीनारें हैं। पूरा शिखर विभिन्न स्तरों में विभाजित है, जो इसकी भव्यता को और बढ़ा देता है। इन नक्काशीदार सतहों के कुछ हिस्सों में, मूर्तियाँ भी मौजूद हैं, जो संभवतः देवी-देवताओं या पौराणिक कथाओं को दर्शाती हैं। इसके अतिरिक्त, मूर्तियाँ शिखर के आधार पर छोटे मंडपों में स्थित हैं, जो शिखर की कलात्मक अभिव्यक्ति को और समृद्ध बनाती हैं।

सभामंडप के ऊपर स्थित शिखर कई क्षैतिज परतों से बना एक पिरामिडनुमा ढांचा है। ये परतें शीर्ष की ओर क्रमशः संकरी होती जाती हैं, जिससे शिखर को एक सीढ़ीनुमा और ऊँचा रूप मिलता है। शिखर के शीर्ष पर एक छोटा कलश स्थापित है। शिखर की प्रत्येक परत वर्गाकार या आयताकार पैनलों के संग्रह से सुसज्जित है। इन पैनलों पर देवताओं, पशुओं या ज्यामितीय आकृतियों के चित्रण जटिल रूप से उकेरे गए हैं। शिखर की बाहरी दीवारों पर छोटे-छोटे आले गढ़े गए हैं। इन आलों में मूर्तियाँ हैं, जो

संभवतः विभिन्न देवताओं या पौराणिक कथाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन मूर्तियों का अस्तित्व दर्शाता है कि शिखर केवल एक संरचनात्मक घटक न होकर, एक कलात्मक और धार्मिक कथा के रूप में भी कार्य करता है।

**तलछंद /अधिष्ठान :** तलछंद न केवल आधारशिला है, बल्कि मंदिर की संपूर्ण स्थापत्य पहचान का सार भी है। इसकी दीवारें और मूर्तियाँ उस समय की धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक पदानुक्रम और कलात्मक संवेदनाओं को मूर्त रूप देती हैं। इसमें रथिकाएँ (ऊर्ध्वाधर उभार) शामिल हैं जो शिखर को स्पष्ट रूप से विभाजित करती हैं। भद्र (मुख्य उभार) और कर्ण (कोणीय उभार) प्रत्येक पक्ष को सुशोभित करते हैं। ये उभार विस्तृत रूप से गढ़े गए हैं, जो देवताओं, युगलों और विभिन्न पौराणिक पात्रों को दर्शाते हैं। प्रत्येक ऊर्ध्वाधर खंड में देव कक्ष हैं, जिनमें शिव, विष्णु, पार्वती, गणेश और अन्य की मूर्तियाँ हैं। देव कक्षों के ऊपर स्थित तोरण-शैली की छतरियाँ जटिल रूप से उकेरी गई हैं। तलछंद में उत्कृष्ट स्त्री आकृतियाँ प्रदर्शित हैं–कुछ नृत्य करती हुई, कुछ अलंकृत–जो मध्ययुगीन मंदिर वास्तुकला की विशिष्टता है। तलछंद एक मनोरम लयबद्ध पुनरावृत्ति प्रदर्शित करता है–रेखाएँ, मूर्तियाँ और उभार सभी एक सामंजस्यपूर्ण क्रम में व्यवस्थित हैं। यह मंदिर को एक भव्य आभा और दिव्यता प्रदान करता है।

**अद्भुत जी का मंदिर, चित्तौड़गढ़ दुर्ग (राजस्थान) -**

कीर्ति स्तम्भ से दक्षिण दिशा में स्थित "भीमताल कुण्ड की ओर जाने वाले रास्ते में पश्चिम के किनारे पर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में यह मंदिर स्थित है। जिसमें की गई खुदाई अत्यंत कलात्मक सौंदर्य से परिपूर्ण है। इस मंदिर के गर्भगृह में स्थित शिवलिंग के पीछे की त्रिमूर्ति की प्रतिमा, समिद्धेश्वर मंदिर में स्थित त्रिमूर्ति के समान है। इस अद्भुत प्रतिमा को देखकर ही लोगों द्वारा इसका नाम अद्भुत जी रख दिया गया। इस मंदिर का निर्माण सन 1483 ई. में महाराणा रायमल के समय में हुआ।"[5]

**गर्भगृह :** गर्भगृह का सबसे उल्लेखनीय पहलू भगवान शिव की विशाल त्रिमूर्ति प्रतिमा है। यह प्रतिमा मंदिर को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। इसमें भगवान शिव के तीन मुख प्रदर्शित हैं। मध्य मुख शांत, सौम्य और प्रमुखता से उभरे हुए हैं, जबकि आसन्न मुखों के भाव थोड़े भिन्न हैं। मुख्य त्रिमूर्ति के नीचे एक छोटी विष्णु मूर्ति है जो एक छोटे से आले में खड़ी अवस्था में चित्रित है। गर्भगृह की छत गोलाकार और वलयाकार है, जो जटिल नक्काशी से सुसज्जित है। वलयों की यह गोलाकार व्यवस्था एक शंकु के आकार में ऊपर की ओर उठती है, जो नागर शैली के उप-प्रकारों, जैसे महामारु शैली, जो अपनी सजावटी और बहु-स्तरीय छतों के लिए जानी जाती है, की विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाती है।

**अंतराल :** अंतराल का मुख्य आकर्षण इसकी जटिल नक्काशीदार चौखट है। इसमें कई समानांतर पट्टियाँ हैं जो कलात्मक सघनता को बढ़ाती हैं। द्वार के दोनों ओर अलंकृत स्तंभ हैं, जिनमें से प्रत्येक के ऊपर जटिल नक्काशीदार खण्ड हैं। ये खण्ड प्रवेश द्वार के ऊपरी भाग को सहारा देते हैं और अनूठी राजस्थानी गुजराती, सोलंकी-मारू, गुर्जर या महामारू स्थापत्य शैली को दर्शाते हैं। द्वार के ऊपर, एक क्षैतिज पट्टी लघु देवताओं की आकृतियों और ज्यामितीय स्वरुप से सुसज्जित है। सबसे ऊपरी भाग में मंदिर की छत पर पाई जाने वाली नक्काशी के समान विस्तृत नक्काशी है। चौखट के निचले हिस्से द्वारपालों की छवियों को प्रदर्शित करते हैं। स्तंभों, खण्डों और चौखट पर पुष्प, लता और ज्यामितीय रूपांकनों से विस्तृत नक्काशी की गई है। यह जटिल नक्काशी समकालीन मध्ययुगीन हिंदू मंदिर कला

की असाधारण शिल्पकला का उदाहरण है। ऊपरी क्षैतिज पट्टी में उड़ते हुए गंधर्वों की आकृतियों वाले छोटे-छोटे आले हैं, जो अक्सर मध्ययुगीन मंदिरों में देखे जाते हैं। द्वार के शीर्ष पर मध्य में गणेश की एक छोटी मूर्ति है, जिसे ललाट बिंब कहा जाता है। इस स्थान को अक्सर पवित्रता और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

**शिखर :** खंडित शिखर मंदिर के मुख्य गर्भगृह के ठीक ऊपर पंचरथ स्वरुप में स्थित है, जो इसे मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण और पूजनीय भाग बनाता है। इसकी ऊँचाई और विस्तृत नक्काशी न केवल एक कलात्मक उपलब्धि है, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से मंदिर की आध्यात्मिक शक्ति और दिव्यता का प्रतीक भी है। यह शिखर एक विशाल मीनार की तरह भव्य रूप से उभरा हुआ है, जिसके चारों ओर कई छोटी मीनारें हैं। पूरा शिखर विभिन्न स्तरों में विभाजित है, जो इसकी भव्यता को और बढ़ा देता है। इन नक्काशीदार सतहों के कुछ हिस्सों में, मूर्तियाँ भी मौजूद हैं, जो संभवतः देवी-देवताओं या पौराणिक कथाओं को दर्शाती हैं।

**मंडप :** मूर्तियाँ शिखर के आधार पर छोटे मंडपों में स्थित हैं, जो शिखर की कलात्मक अभिव्यक्ति को और समृद्ध बनाती हैं। सभामंड़प तथा अर्धमंडप का शिखर पूर्णरूप से क्षतिग्रस्त हो चुका है। "मंडप में तीन प्रवेश द्वार है पश्चिमाभिमुखी द्वार मुख्य द्वार है मुख्या मंदिर 4 फीट 8 ईंच गहरा है मंडप में 4 सीढियां उतर कर अन्दर पहुंचा जाता है।"[6]

**सदाशिव मंदिर /त्रिमूर्ति मंदिर, बाडोली (राजस्थान) -**

परिसर में स्थित पंचरथ गर्भगृह का सबसे सुंदर मंदिरों में से एक शिव को समर्पित सदाशिव मंदिर है। गर्भगृह में एक विशाल त्रिमूर्ति प्रतिमा स्थापित है। बाडोली मंदिर प्रांगण में पूर्व की ओर स्थित इस मंदिर का निर्माण 10वीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में हुआ था। वर्तमान में एक उथला अंतराल तथा एक छोटा गर्भगृह है। अंतराल के सामने स्थित मंच से ज्ञात होता है कि इसमें एक छोटा मुखमंडप भी था। मंदिर में एक पीठ तथा इस पीठ के ऊपर खुर, कुंभ, कलश, अंतरपट्टिका और कपोतपालिका ढलाई वाला वेदीबंध है। उत्तरी दीवार में बौनी आकृतियाँ उत्कीर्ण है। इसमें मूर्तियों से रहित एक साधारण जंघा को कीर्तिमुखों क्षैतिज पट्टी से सजाया गया है, जंघा का ऊपरी भाग आपस में गुंथी हुई वंदनमालिका से अलंकृत है।

मंदिर में एक सात मंजिला शिखर है जिस पर गवाक्ष मेहराबों का एक एकीकृत जाल है तथा जिसके किनारे नक्काशीदार मकर व गज के मुख से सुशोभित हैं। पुष्प और शंख की आकृतियाँ शिखर के अग्रभाग की शोभा बढ़ा रहे हैं। अंतराल के प्रवेश द्वार पर दो वर्गाकार स्तंभ स्थित है जिन पर नृत्य मुद्रा में त्रिशूल और सर्प धारण किए चतुर्भुजी देवियाँ, संगीतकार, सेवक स्तंभ में विराजमान तथा ऋषभ उत्कीर्ण हैं, अंतराल की आतंरिक दीवारों पर आले हैं जो वर्तमान में रिक्त हैं। गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर "ललाट बिम्ब पर नटराज की मूर्ति है"[7] तथा साधारण शाखाओं सहित गंगा को दाहिनी ओर एक जल कलश पकड़े अपने वाहन मकर पर खड़ी हुई तथा बाईं ओर यमुना को जल कलश पकड़े कच्छप पर खड़ी दर्शाया गया है साथ ही दोनों देवियों के पास चतुर्भुज द्वारपाल अंकित हैं। "उदुम्बर पर बीच मे कमल दण्ड पर पूर्ण विकसित दो कमलों के नीचे एक-एक किन्नर वाद्य बजाते हुए अंकित किए गए हैं।"[8]

गर्भगृह के प्रवेश द्वार के उपरी भाग के मध्य में नृत्य करते दस भुजाओं वाले शिव के नटराज स्वरुप को दर्शाया गया है जो अक्षमाला, खट्वांग, डमरू, सर्प, कपाल और त्रिशूल धारण किए हुए हैं जिनके साथ एक संगीतकार और एक नर्तक की प्रतिमा अंकित हैं। चतुर्भुजी रूप में चित्रित देवियाँ जटामुकुट धारण किए हुए हैं और अपने अन्य दो हाथों में अपने-अपने गुणों के अनुरूप अक्षमाला और कमंडल धारण किए हुए हैं। एक छोटे गर्भगृह की पिछली दीवार पर त्रिमूर्ति की विशाल आवक्ष प्रतिमा है जिसे सदाशिव के नाम से भी जाना जाता है, जिसके तीन मुख है सामने वाला मुख तत्पुरुष का, दाहिना मुख अघोर का तथा बाया मुख वामदेव का है, जिनके मुख क्षतिग्रस्त हो चुके है। इस प्रतिमा के दाहिनी ओर ऊपर एक ब्रह्मा की प्रतिमा स्थित है। जो अपने वाहन हंस के साथ कमल पर खड़े हैं। बाईं ओर विष्णु की चतर्भुज प्रतिमा को दर्शाया गया है,

**निष्कर्ष -**

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चित्तौड़गढ़ का त्रिमूर्ति मंदिर कला और स्थापत्य के मामले में अत्यंत महत्वपूर्ण धरोहर है। जिस कलात्मक कुशलता और स्थापत्य संतुलन के साथ इन मंदिरों में त्रिमूर्ति–ब्रह्मा, विष्णु और शिव की अवधारणा को दिखाया गया है, वह उस ज़माने के कारीगरों की हाई कलात्मक कुशलता और गहरी धार्मिक भावना को दिखाता है। मंदिरों का स्थापत्य नागर शैली के खास तत्त्व गर्भगृह, मंडप और शिखर को साफ तौर पर दिखाता है, जो राजस्थानी मंदिर स्थापत्य की खास पहचान दिखाते हैं। मूर्तियों में बारीक सजावट, संतुलन, अनुपात, अर्थपूर्ण रूप और प्रतिष्ठित सिद्धांत का पालन इन मंदिरों को कलात्मक रूप से अद्वितीय बनाते हैं। इसके अलावा, मंदिरों के अंदर खुदे हुए पौराणिक दृश्य और साथ में बनी मूर्तियां उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को दिखाती हैं।

**सन्दर्भ -**

1. गुप्ता मोहन लाल, "राजस्थान जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन", राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर, 2004
2. कासलीवाल मीनाक्षी 'भारती', "भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला", राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 10वाँ संस्करण, 2022
3. कासलीवाल मीनाक्षी 'भारती', "भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला", राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 10वाँ संस्करण, 2022

4. मिश्र रतन लाल, "राजस्थान के दुर्ग", साहित्य संस्थान, शोध पुस्तकालय, उदयपुर, 1981
5. सिंघानिया संजय, "चित्तौडगढ़ गाईड बुक", मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011 प्रकाशक के अंतर्गत
6. जुगनू श्रीकृष्ण, "चित्तौडगढ़ का इतिहास (रामवल्लभ सोमानी कृत वीर-भूमि चितौड पर आधारित)", राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2022
7. वशिष्ट नीलिमा, "राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2001
8. वशिष्ट नीलिमा, "राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2001